मुक्ति-पर्व गीत

आओ मिलकर याद करें हम, गुरुमत के दीवानों को ॥
जिनके बल पर मिशन खड़ा है, उन सबके बलिदानों को ॥
जय-जय संत महान..... जय उनका बलिदान

जगतमाता बुधवंतीजी ने, सेवा करना सिखलाया
माँ की ममता से सींचा, गुलशन को प्यार से महकाया
समय के सद्गुरु के वचनों को, जीवन में यूँ अपनाया
धन्य-धन्य कह उठी ये धरती, माँ सम तुमको है पाया
मुक्ति का फल देने आई, धरती की संतानों को ॥
जय-जय संत महान..... जय उनका बलिदान

युगपुरूष अवतारसिंह जी, शहंशाह कहलाये थे
बूटासिंहजी की कृपा से, रमे राम को पाये थे
गली-गली कूचे-कूचे, सच की आवाज़ लगाये थे
जाति-मज़हब की बेड़ी से, सबको आज़ाद कराये थे
एक ही पल में काट दिया, चौरासी के व्यवधानों को ॥
जय-जय संत महान..... जय उनका बलिदान

युग-प्रवर्तक गुरुबचनजी, युग बदलने आये थे,
देश-विदेश में जा-जाकर, सच का पैग़ाम सुनाये थे
स्वस्थ और सुन्दर समाज का, सपना मन में सजाये थे
मानवता के ध्येय के ख़ातिर, अपने प्राण लुटाये थे
अभी हमें पूरा करना है, सद्गुरू के अरमानों को ॥
जय-जय संत महान..... जय उनका बलिदान

ज़ुल्मों-सितम की आँधी में, संतों ने सर न झुकाया था,
खाई गोलियाँ, जेल गये, पर झूठ को ना अपनाया था
मान-बड़ाई, धन-दौलत, गुरुमत के लिए ठुकराया था
बस एक गुरू के होके रहे, कोई और न उनको भाया था
कोई ताकत डिगा न पाई, मुर्शिद के परवानों को ।।
जय-जय संत महान..... जय-जय संत महान

अमूल्य धरोहर संतों की, हमको सँभालते जाना है
संतों की बताई राहों पर, उत्साह से कदम बढ़ाना है
ब्रह्मज्ञान की ज्योति को, अब हर घर में पहुँचाना है
ज्ञान-कर्म के संगम से, संसार को स्वर्ग बनाना है ।
सर-आँखों पर " कपिल" है रखना, गुरू आदेश-विधानों को ॥
जय-जय संत महान..... जय उनका बलिदान

तर्ज़ : आओ बच्चों तुम्हें दिखाये झाँकी---------(जाग्रति)